पद

पदों की व्याख्या

1.

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर
भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

शब्दार्थ: हरि = ईश्वर, हरो = हरण करना, जन = लोग, भीर = कष्ट, दुख, लाज = लज्जा ;इश्शतद्ध, चीर = वस्त्रा, भगत = भक्त, नरहरि = नृसिंह रूप, गजराज = ऐरावत, कुंजर = हाथी, पीर = पीड़ा, म्हारी = हमारी।

व्याख्या: मीराबाई लोगों के दुख से द्रवित होकर कहती हैं - हे प्रभु! आप लोगों की पीड़ा को दूर कर दीजिए। आपने पौराणिक समय में अनेक भक्तों की लाज रखी है। उदाहरणतया आपने द्रौपदी की लाज रखने के लिए चीरहरण के अवसर पर उसके वस्त्रा को इतना बढ़ा दिया कि वे दुःशासन के हाथों लज्जित नहीं हो पाईं। आपने ही अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए नृसिंह भगवान का रूप धारण करके उसके प्राणों की रक्षा की थी। आपने ही डूबते हुए गजराज को बचाया था। हाथी का कष्ट हरने के लिए आपने ही मगरमच्छ को मारा था। मीराबाई कहती हैं, मैं तो आपकी दासी हूँ। आप मेरी भी पीड़ा दूर कीजिए।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. मीरा की कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति-भावना प्रकट हुई है।
2. ईश्वर की भक्तों पर दया करने की आदत पर प्रकाश डाला गया है।

कला पक्ष:

1. भाषा सरल एवं सरस है। भाषा प्रभावोत्पादक भी है।
2. ब्रजभाषा के शब्दों के साथ-साथ राजस्थानी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।
3. ‘काटी-कुण्जर’ में अनुप्रास अलंकार है।
4. पूरे पद में दृष्टांत अलंकार का प्रयोग किया गया है।
5. प्रत्येक पंक्ति के अंतिम पद ‘शब्द’ तुकांत हंै।
6. गेयात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

2

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री वुंफज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
उँफचा उँफचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।।

शब्दार्थ: म्हाने = हमें, चाकर = नौकर, सेवक, राखो = रखो, रहस्यूँ = रहकर, दरसण = दर्शन, पास्यूँ = पाऊँगी, बिन्दरावन = वृंदावन, जागीरी = जागीर, संपत्ति, धेनु = गायें, बणावं = बनाव, पहर = पहनना, जमनाजी = यमुनाजी, तीरां = किनारा, हिवड़ो = हृदय, घणो = ज्यादा, अधीराँ = अधीर 'व्याकुल'।

व्याख्या: मीरा श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि हे कृष्ण! आप मुझे दासी बनाकर रख लीजिए। वे गिरधरी जी से पुनः यही विनती हराती हैं कि दासी बनकर वह उनके लिए बाग लगाएँगी और नित्य उठकर उनके दर्शन पा सकेंगी। वह वृंदावन की कुंज गलियों में कृष्ण की लीला का गान करना चाहती हैं। दासी बनकर उन्हें कृष्ण उनके नाम स्मरण का अवसर प्राप्त हो जाएगा। भाव एवं भक्ति की जागीर अथवा साम्राज्य भी उन्हें प्राप्त हो जाएगा। वे श्रीकृष्ण के रूप-माधुर्य का वर्णन करती हुए कहती हैं कि श्रीकृष्ण के शीश पर मोर का मुकुट तथा तन पर पीले वस्त्रा सुशोभित हो रहे हैं। उन्होंने अपने गले में वैजंती के फूलों की माला भी धरण कर रखी है। वे वृंदावन में गायें चराते हैं और मनमोहक मुरली बजाते हैं। वृंदावन में उनके उँचे-उँचे महल हैं। मीराबाई महल के विशाल आँगन में पुफलवारी लगाना चाहती हैं। वे कुसुंबी साड़ी पहन कर अपने प्रिय के दर्शन प्राप्त करना चाहती हैं। मीराबाई कृष्ण जी से विनती करते हुए कहती हैं कि यमुना नदी के किनारे आप मुझे आधी रात में दर्शन देकर कृतार्थ करें। आप ही मेरे प्रभु हैं, आप ही गिरधर नागर हैं। मीरा का हृदय अपने प्रिय 'श्री कृष्ण' से मिलने के लिए व्याकुल हो रहा है।

काव्य-सौंदर्य:

भाव पक्ष:

1. यहाँ मीराबाई की दास्य-भक्ति परिलक्षित हुई है।
2. मीरा कृष्ण-मिलन के लिए व्यावुफल हो रही हैं।
3. श्रीकृष्ण के रूप-माधुर्य का सजीव वर्णन किया गया है।

कला पक्ष:

1. राजस्थानी भाषा का प्रयोग हुआ है जो भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।
2. 'भाव-भगती', 'मोर-मुकुट', 'मोहन-मुरली' में अनुप्रास अलंकार है।
3. 'ऊँचा-ऊँचा', 'बिच-बिच' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
4. संपूर्ण पद्य में माधुर्य गुण विद्यमान है और गेयात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

पाठ का सार

पारिवारिक दुखों से मुक्ति पाने के लिए मीराबाई घर-द्वार छोड़कर वृंदावन में जा बसी थीं एवं कृष्णमय हो गई थीं। उनकी रचनाओं में उनके आराध्य कहीं निर्गुण निराकार ब्रह्म, कहीं सगुण साकार गोपीवल्लभ श्रीकृष्ण और कहीं निर्मोही परदेशी जोगी के रूप में हैं। वे गिरध्र गोपाल के अनन्य प्रेम में निमग्न हैं।

पहले पद में मीराबाई मनुष्य मात्रा की पीड़ा हरने की बात कहती हैं। वे विभिन्न ऐतिहासिक एवं पौराणिक उदाहरणों द्वारा अपनी बात की पुष्टि करती हैं। वे द्रौपदी, प्रह्लाद, गजराज तथा कुंजर के उदाहरण देकर उन पर हुई ईश्वरीय कृपा की याद दिलाती हैं। इन उदाहरणों के माध्यम से वे ईश्वर को कर्तव्यबोध् कराती हैं। उनके कथनानुसार केवल ईश्वर ही जन-जन की पीड़ा हर सकते हैं।
दूसरे पद में मीरा अपने आराध्य की दासी बनकर रहने की इच्छा प्रकट करती हैं। दासी बनकर वे अपने आराध्य के सभी दैनिक कार्य करना चाहती हैं। वे ईश्वर के दर्शन की अभिलाषा करती हैं। उनके प्रभु पीतांबर, सिर पर मोरमुकुट एवं गले में वैजंतीमाला धारण करते हैं। वे वृंदावन में गायें चराते हैं। वे कुसुंबी साड़ी पहनकर आधी रात के समय अपने आराध्य कृष्ण के दर्शन के लिए यमुना के तट पर जाना चाहती हैं। मीरा के लिए उनके ईश्वर ही सर्वस्व हैं। प्रभु-मिलन न होने के कारण उनका हृदय अधीर हो रहा है।